Lecture No – 02

Name of the college – APSM college, Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt – AIH&C
Lession/plan – B.A, AIH&C (H) part – I – paper – I
Date – 08 - 04 - 2021
Name of the topic – Mahmud Gazanavi Ke pramukh Invasions.

महमूद गजनवी के प्रमुख आक्रमण

महमूद ने भारत पर 1000 ई. से 1027 ई. तक कुल सत्रह बार आक्रमण किया और इन सभी आक्रमणों में उसे सफलता प्राप्त हुई। महमूद के इन आक्रमणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

(1) सीमान्त दुर्गों पर आक्रमण (2) पंजाब पर आक्रमण
(3) भेरा पर आक्रमण (4) मुल्तान के आक्रमण
(5) सुखपाल पर आक्रमण (6) आनन्दपाल पर आक्रमण
(7) नारायणपुर का युद्ध – 1009 ई. (8) मुल्तान का पुनः आक्रमण
(9) थानेश्वर पर आक्रमण (10) नन्दन पर आक्रमण
(11) कश्मीर पर आक्रमण (12) कन्नौज व मथुरा पर आक्रमण
(13) कालिंजर पर आक्रमण (14) पंजाब पर आक्रमण
(15) ग्वालियर तथा कालिंजर पर पुनः आक्रमण
(16) सोमनाथ पर आक्रमण
(17) जाटो पर आक्रमण।

महमूद ने भारत पर 1000 ई. से 1027 ई. तक कुल सत्रह बार आक्रमण किया और और सभी आक्रमण में सफलता प्राप्त की।

P.t.o.

① सीमान्त दुर्गों पर आक्रमण → 1000 ई० में महमूद गजनवी ने प्रथम आक्रमण हिन्दूशाही राज्य के सीमान्त दुर्ग पर किया। इसमें उसने बहुत से दुर्ग तथा खबर दर्रों को यानि कि खबर दो को खैबर दर्रे पर अपना अधिकार कर लिया और जीते हुए दुर्गों में अपने अधिकारियों को नियुक्त कर गजनी वापस लौट गया।

(2) पंजाब पर आक्रमण :—

1001 ई. में महमूद गजनवी के पंजाब पर आक्रमण किया। इस समय पंजाब पर हिन्दूशाही राजा जयपाल का शासन था। महमूद ने 15,000 घुड़सवारों की सेना लेकर इस पर आक्रमण किया। 28 नवम्बर 1001 ई. को पेशावर के निकट घमासान युद्ध हुआ, जिसमें जयपाल ने तुर्क सेना का साहसपूर्वक मुकाबला किया। परन्तु उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा। जयपाल को उसके पुत्रों तथा सम्बंधियों के साथ बन्दी बना लिया गया। इस युद्ध में महमूद को लूट में अतुल धन राशि प्राप्त हुई। अन्त में जयपाल ने 2,50,000 दीनार तथा 50 हाथी देने का वचन देने पर महमूद ने जयपाल को मुक्त कर दिया गया। इस अपमान को सहन नहीं कर पाने के कारण जयपाल ने आग में कूदकर आत्महत्या कर ली। उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र आनन्दपाल राजा बना।

(3) भेरा पर आक्रमण → महमूद गजनवी का तीसरा आक्रमण 1004 में झेलम नदी के तट स्थित

पर स्थित भीरा नगर पर हुआ। राजा चार दिन तक वीरता से लड़ता रहा, परन्तु उसकी पराजय हुई। महमूद ने भीरा राज्य के राजा वाजीराव से बहुत साधन प्राप्त किया और वहाँ अपना शासक नियुक्त कर दिया।

④ **मुल्तान के आक्रमण** → 1006 ई. में मुल्तान के शासक अब्दुल फतह दाऊद पर आक्रमण किया। यद्यपि वह मुसलमान था। परन्तु वह उदार दृष्टिकोण का था। दाऊद बड़ी बहादुरी से लड़ा और उसने महमूद को 20 हजार दिरहम वार्षिक कर देने का वायदा किया। आनन्दपाल के पुत्र सुखपाल उर्फ नवासाशाह, जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, को वहाँ का शासक बनाया गया।

⑤ **सुखपाल पर आक्रमण :—** कुछ समय बाद सुखपाल ने इस्लाम धर्म त्याग दिया और सुखपाल सेवकपाल के नाम से स्वतंत्र शासक बन गया। अतः महमूद ने 1008 ई. में पुनः मुल्तान पर आक्रमण किया। सुखपाल पराजित हुआ और बन्दी बना लिया गया। फतह दाऊद को पुनः मुल्तान का शासक बना दिया गया।

⑥ **आनन्दपाल पर आक्रमण और नगरकोट की लूट—**

आनंदपाल पंजाब का शासक था। महमूद को पंजाब विजय किये बिना भारत में आगे बढ़ना कठिन था। अतः उसने 1008 ई. में एक विशाल

P.T.O.

सेना के साथ आनन्दपाल पर आक्रमण कर दिया। इधर आनन्दपाल ने भी राजपूत राज्यों का एक संयुक्त मोर्चा बनाया। कन्नौज, ग्वालियर, कालिंजर, उज्जैन तथा दिल्ली आदि के राजाओं ने उसकी सहायता की। इस समय हिन्दुओं में भी अपनी संस्कृति को बचाने के लिए काफी जोश था। स्त्रियों ने भी अपने आभूषण बेचकर सहायता की।

झेलम नदी के किनारे वैहिन्द नामक स्थान पर दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ। प्रारम्भ में हिन्दुओं ने मुसलमानों को मार भगाया। 3 या 4 हजार मुसलमान मारे गए। सुल्तान महमूद घबरा गया। वह युद्ध बन्द करने की घोषणा करने ही वाला था कि आनन्दपाल का हाथी बिगड़ गया और भाग खड़ा हुआ। सेना में भगदड़ मच गई, तथा विजय भी महमूद को मिली। मुसलमानों ने दो दिन तक हिन्दुओं का वध किया। जिसमें लगभग 20 हजार हिन्दू मारे गये।

इस विजय से प्रोत्साहित होकर महमूद ने नगरकोट (कांगड़ा) पर आक्रमण किया। दुर्ग में अपार धनराशि थी। महमूद को इस विजय में अत्यधिक धन मिला। एक मुसलमान इतिहासकार के अनुसार इस किले में इतनी धनराशि मिली थी जितने ऊँट प्राप्त हो सके; उन सब पर लादने के बाद भी सोना बच गया। उतबी ने लिखा है कि यहाँ 7 लाख राजकीय दिरहम मूल्य के टकसाली सिक्के तथा 7 लाख दिरहम के मूल्य के 400 मन सोना-चाँदी के पात्र, इसके अतिरिक्त उसे वहाँ एक चाँदी का घर भी प्राप्त हुआ। जो 30 गज लम्बा तथा 15 "

गज चौड़ा था। फरिश्ता के अनुसार महमूद को लूट में 7 लाख स्वर्ण दीनार 700 मन सोना - चाँदी के पात्र 200 मन विशुद्ध सोना, 2000 मन चाँदी और 20 मन रत्न - जवाहरात प्राप्त हुए।

(7) नारायणपुर का युद्ध (1009 ई.) महमूद पंजाब - विजय के बाद दिल्ली पहुँचने वाला था, परन्तु रास्ते में ही नारायणपुर नामक स्थान पर हिन्दू - सेना मुठभेड़ हो गई जिसमें हिन्दुओं की पराजय हुई।

(8) मुल्तान का पुनः आक्रमण :— मुल्तान की पिछली विजय अधिक स्थायी सिद्ध नहीं हुई थी। अतः महमूद ने 1010 ई. में मुल्तान पर पुनः आक्रमण किया। मुल्तान पर उसका अधिकार हो गया और वहाँ से बहुत बड़ी धनराशि लूटकर वह गजनी चला गया। मुल्तान को गजनी राज्य में सम्मिलित कर लिया।

(9) थानेश्वर पर आक्रमण :— थानेश्वर उत्तरी भारत का प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ के राजा को जाट जाति संख्या में होती था। अतः 1011 ई. में इस पर आक्रमण किया गया। महमूद की विजय हुई। यहाँ से भी उसे बहुत सा धन प्राप्त हुआ यह आक्रमण महमूद के प्रसिद्ध आक्रमणों में से एक है।

(10) नन्दन पर आक्रमण :— महमूद गजनवी ने 1014 ई. में नन्दन पर आक्रमण किया। यहाँ का राजा आनन्दपाल का पुत्र त्रिलोचनपाल था। उसने वीरता से शत्रु का सामना किया, किन्तु पराजित हुआ। वह भाग कर कश्मीर चला गया। यहाँ से भी P.T.O.

महमूद ने बहुत सा धन लूटा। नन्दन की विजय सम्पूर्ण पंजाब पर महमूद का पूर्ण अधिकार हो गया। इस प्रकार हिन्दूशाही राज्य के पश्चिमी तथा मध्य क्षेत्र और राजधानी नन्दन को उसने अपनी गजनी साम्राज्य में मिला लिया।

(11) कश्मीर पर आक्रमण :—

लाहौर से भागकर त्रिलोचनपाल कश्मीर के दुर्ग में जा छिपा था। अतः महमूद ने 1008 ई. में इस किले को लेने का बहुत प्रयास किया परन्तु असफल होकर गजनी लौट गया।

(12) कन्नौज व मथुरा पर आक्रमण :—

1018 ई. में महमूद ने बुलन्द शहर व मथुरा पर आक्रमण किया। मथुरा में मन्दिरों में अनुपम पच्चीकारी का कार्य देखकर महमूद आश्चर्यचकित रह गया। इतिहासकार उतबी ने इस नगर को स्वर्गीय भवन कहा है। महमूद ने मथुरा को जीतकर वहाँ के मंदिरों में संचित काफी धन लूटा और वहाँ के कारीगरों को भी पकड़वा लिया, जिनकी वह गजनी को भी भव्य नगरों में से एक बना सके। फिर उसने कन्नौज पर आक्रमण किया। कन्नौज में इस समय प्रतिहार वंशीय राजा राज्यपाल शासन कर रहा था। महमूद के आगमन की सूचना मिलते ही वह बिना लड़े ही कन्नौज छोड़कर भाग गया। महमूद के सैनिकों द्वारा इस नगर को खूब लूटा गया। इस लूट में उसे अपार धन मिला। 1019 में वह गजनी लौट गया।

(13) कालिंजर पर आक्रमण :— यहाँ पर चन्देल राजा विद्याधर शासन कर रहा था। अतः महमूद ने चन्देल P.T.O.

Scanned with CamScanner

— राजा से बदला लेने के लिए 1020 ई. में कालिंजर पर आक्रमण किया। प्रारम्भ में तो राजा विद्याधर ने बड़ा उत्साह दिखाया, परन्तु बाद में निराश होकर कहीं भाग गया। महमूद ने वहाँ के राजमहलों को खूब लूटा।

(14) पंजाब पर आक्रमण :— महमूद के लौट जाने के बाद पंजाब की दशा कुछ बिगड़ने लगी। अतः 1020 ई. में पंजाब की पुनर्व्यवस्था करने के लिए उस पर पुनः आक्रमण किया। हजारों बौद्धों को मुसलमान बना दिया गया। सम्पूर्ण हिन्दूशाही राज्य को गजनी राज्य में मिला लिया गया।

(15) ग्वालियर तथा कालिंजर पर पुनः आक्रमण :— 1022 ई. में इन दोनों राज्यों पर पुनः आक्रमण किया गया। ग्वालियर के शासक ने धन देकर महमूद से सन्धि कर ली।

(16) सोमनाथ पर आक्रमण :— यह महमूद का सबसे प्रसिद्ध आक्रमण था। 1025 ई. में सौराष्ट्र के समुद्र तट पर स्थित सोमनाथ के मंदिर के पर आक्रमण किया गया। इस मन्दिर में अपार धन राशि थी। यह शिव मंदिर था।

(17) जाटों पर आक्रमण :— यह महमूद का अंतिम आक्रमण था। जाटों ने सन 1025 ई. में महमूद को गजनी लौटते समय परेशान किया था। उनसे दंड लेने के लिए 1027 ई. में आक्रमण हुआ। जाट पराजित हुए और उनकी बस्तियाँ जला दी गई। 1030 ई. में महमूद की मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप उसका राज्य गंगा से कैस्पियन सागर तक और समरकन्द से कुरदिस्तान तक विस्तृत हो गया। उसके राज्य में इराक और अफगानिस्तान भी शामिल थे।